रसनिष्पत्ति

अतुलकुमारमिश्रः
सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः

संस्कृत विभाग

रसस्वरूप

कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च।

रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ॥

विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः।

व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः ॥

स्थायी – अविच्छिन्नप्रवाहः, भावः – चित्तवृत्तिविशेषः।

उक्तं हि भरतेन- विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः ॥

संस्कृत विभाग

- **रस-**

  श्रृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत

- **स्थायीभाव-**

  रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय

- **वर्ण-**

  श्याम, शुक्ल, कपोत, लाल, सुवर्ण, कृष्ण, नीला, पीला

- **देवता-**

  विष्णु, प्रमथ, यमराज, रूद्र, काल, महाकाल, गन्धर्व

निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः ॥

संस्कृत विभाग

- स्थायीभाव- सुषुप्तावस्था में रहने वाली चित्तवृत्ति विशेष।
- विभाव- रस भाव की उद्बोधक स्थिति। भेद २- आलम्बन, उद्दीपन(उत्तेजना देने वाला)।
- अनुभाव- विभाव के द्वारा आन्तर अभिव्यक्ति रुप अर्थ का बाह्यरुप में अनुभव कराना, अनु पश्चाद् भवन्ति इत्यनुभावाः।
- व्यभिचारीभाव- ये स्थायी भावों के पोषण और अभिव्यञ्जन में सहायक होती हैं, किसी भी रस के साथ इसका नियत सम्बन्ध नहीं रहता है। इसी कारण इसको व्यभिचारी भाव कहते है।

भट्टलोल्लट

- उत्पत्तिवाद, मीमांसा(उत्तर मीमांसा, वेदान्त)।
- विभावादि के संयोग से अनुकार्य राम आदि में रस की उत्पत्ति मानते है।रामादौ अनुकार्ये।
- तद्रूपतानुसन्धाननर्तकेऽपि प्रतीयमानो रसः।

संस्कृत विभाग

शङ्कुक

- अनुमिति, न्याय मत के अनुयायि। संयोग शब्द का अर्थ गम्यगमक भाव है।
- सम्यक्प्रतीति, मिथ्याप्रतीति, संशयप्रतीति, सादृश्यप्रतीति इनसे भिन्न चित्रतुरगन्याय से नट में राम बुद्धि होती है। नट को ही राम मानकर सामाजिक अपनी वासना के बल से उस अनुमीयमान रस का ही आस्वादन करता है। "सामाजिकानां वासनया चर्व्यमाणः रस इति शङ्कुकः"।
- इयं सीता रामविषयक रतिमती, अयं रामः सीताविषयकरतिमान् तत्र विलक्षणस्मित्कटाक्षादिमत्वात्' इस प्रकार आनुमानिक रस की प्रतीति होती है।

भट्टनायक

- निष्पत्ति -भुक्तिवाद, संयोग – भोज्यभोजकभाव सम्बन्ध सांख्यमतानुयायि। तीनों मतों का खण्डन।
- भुक्तिवाद की स्थापना के लिये शब्द के दो व्यापार के अतिरिक्त भावकत्व तथा भोजकत्व नामक दो व्यापारो की कल्पना की है।
- विभावादिसाधारणीकरणात्मना(व्यक्तिविशेषांसपरिहारेणोपस्थापनं) भावकत्वव्यापारेण भाव्यमानः, भोगेन भुज्यते।

अभिनवगुप्त

- अभिव्यक्ति, ध्वनिवादि(आलंकारिक मत)।
- सामाजिकगत स्थायीभाव ही रसानुभूति का निमित्त होता है। शब्द के तीनों व्यापारों को इन्होंने स्वीकार किया है।
- अभिनवगुप्त ने रस को अलौकिक कहाँ है। क्योंकि रस न तो कार्य है न ज्ञाप्य है।

धन्यवादाः